संस्कृति एवं व्यक्तित्व में सम्बन्ध (Relationship Between Culture and Personality)

मानव जन्म से ही एक जैविकीय प्राणी होता है। वंशानुक्रम व्यक्तित्व के लिए शरीर रूपी कच्चा माल उपलब्ध कराता है, जिसे समाज की संस्कृति परिपक्वता प्रदान करती है। इस तरह संस्कृति व्यक्तित्व को निर्मित करती है। यह एक पहलू है।

संस्कृति और व्यक्तित्व के संबंध का दूसरा पहलू यह है कि व्यक्ति में स्वतन्त्र रूप से सोचने, समझने, निर्णय करने, बनाने एवं बिगाड़ने की असीम क्षमता है। इसी क्षमता के कारण वह संस्कृति का निर्माण एवं संचालन करता है। संस्कृति एवं व्यक्तित्व के संबंधों को निम्नलिखित रूप से समझा जा सकता है:—

(1) व्यक्तित्व के विकास में संस्कृति की भूमिका (Role of Culture in the Development of Personality):— व्यक्तित्व के निर्माण एवं विकास में संस्कृति की भूमिका अद्वितीय है। अनेक विद्वानों ने अपने अपने ढंग एवं अध्ययन के आधार पर इस तथ्य को दर्शाया है कि संस्कृति व्यक्तित्व का आधार है।

(1) जान गिलिन ने व्यक्तित्व के विकास में संस्कृति की भूमिका को तीन रूपों में दर्शाया है। पहला, जन्म के बाद व्यक्ति संस्कृति से घिर जाता है जिसका प्रभाव प्रत्यक्ष रूप से उसके ऊपर पड़ता है। दूसरा, संस्कृति व्यक्ति को एक निश्चित ढंग से व्यवहार करने को प्रेरित करता है जिसका प्रभाव व्यक्ति पर पड़ता है। तीसरा, संस्कृति पुरस्कार एवं दण्ड के द्वारा व्यक्ति के जीवन को निर्देशित करता है।

(2) आर लिण्टन ने व्यक्तित्व के विकास मे संस्कृति की भूमिका को दो रूपों में स्पष्ट किया है — पहला, वे प्रभाव जो बच्चों पर वयस्कों के पड़ते है। बच्चों के प्रति वयस्कों का व्यवहार कैसा होगा, इसका निर्धारण संस्कृति करती है। दूसरा, वे प्रभाव जो स्वयं व्यक्ति द्वारा संस्कृति के सामान्य व्यवहार प्रतिमानों को अपनाने के फलस्वरूप उस पर पड़ता है। लिण्टन का यह भी मानना है कि संस्कृति का प्रभाव जीवन-पर्यन्त पड़ता है।

(3) रूथ बेनेडिक्ट ने व्यक्तित्व के विकास में संस्कृति की भूमिका को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि बच्चा जिस संस्कृति के बीच पैदा होता है उससे प्रभावित होता है। बच्चा बोलना सीखते ही अपनी संस्कृति का एक छोटा प्राणी बन जाता है। जब वह बड़ा होता है और सांस्कृतिक कार्यों में भाग लेने लगता है तो संस्कृति की आदतें एवं विश्वास, उसकी आदतें और विश्वास बन जाती है। इस प्रकार संस्कृति की जो प्रकृति होगी, उसी के अनुरूप व्यक्तित्व का निर्माण होगा।

(4) व्यक्तित्व के विकास में महत्त्व रखने वाले कारक, खासकर समाजीकरण के साधन संस्कृति द्वारा प्रभावित होते है। यानि परिवार की प्रकृति, स्वरूप, आकार सामाजिक परिस्थितियाँ एवं भूमिकाएँ, विवाह की प्रकृति, स्वरूप, आकार आदि का निर्धारण संस्कृति के द्वारा होता है। ये कारक व्यक्तित्व को निर्धारित करते है।

इसी प्रकार व्यक्तित्व के अन्य विशिष्ट गुणों का निर्धारण भी संस्कृति करती है। अतः व्यक्तित्व के विकास में संस्कृति की भूमिका सराहनीय है।

classmate
Date
Page

(2) संस्कृति के विकास में व्यक्तित्व की भूमिका (Role of Personality in the formation of culture):—

संस्कृति और व्यक्तित्व के संबंध में दूसरा पहलू यह है कि केवल संस्कृति ही व्यक्तित्व का विकास नहीं करती बल्कि व्यक्तित्व भी संस्कृति को प्रभावित करता है। इसे निम्नलिखित रूप से समझा जा सकता है।—

(1) मानव संस्कृति का निर्माता है। संस्कृति प्रकृति की देन नहीं है, बल्कि मानव की देन है। मानव व्यक्तित्व ने अपनी कुछ खास शारीरिक क्षमताओं (जैसे — मेधावी मस्तिष्क, हाथ, पैर, आँख एवं गर्दन) के कारण प्रकृति प्रदत्त साधनों को जुटाकर संस्कृति का निर्माण किया है। साथ ही मानव व्यक्तित्व द्वारा सदा संस्कृति का परिमार्जन एवं विकास होता रहा है।

(2) हर्सकोविट्स ने जो संस्कृति की परिभाषा दी है, उससे भी पता चलता है कि संस्कृति मानव की देन है। उन्हीं के शब्दों में —
"संस्कृति पर्यावरण का मानव - निर्मित भाग है।"
इससे स्पष्ट होता है कि मानव-जीवन दो प्रकार के पर्यावरणों में पलता है — प्राकृतिक पर्यावरण और सामाजिक पर्यावरण। मानव का सम्पूर्ण सामाजिक पर्यावरण ही उसकी संस्कृति है। इस सामाजिक पर्यावरण को मानव स्वयं निर्मित करता है। इस प्रकार मानव निर्मित संस्कृति में अनेक भौतिक वस्तुएँ — मशीन, कलम, कागज, मकान आदि एवं अभौतिक वस्तुएँ - धर्म, प्रथा, विश्वास, भाषा आदि का समावेश है।

③ इतिहास इसका प्रमाण है कि मानव व्यक्तित्व ने किस प्रकार समाज व संस्कृति की दिशा ही बदल दी। प्राचीन ऋषियों ने हिन्दु संस्कृति की आधारशिला रखी। उस संस्कृति के फलस्वरूप धार्मिक संस्कार एवं रूढ़ियाँ तथा जाति व्यवस्था समाज का अंग बन गई। बाद में बुद्ध और महावीर का उदय हुआ जिन्होंने हिन्दु धर्म के अन्धविश्वास एवं कर्मकाण्ड के विरुद्ध आन्दोलन चलाया। फलस्वरूप हिन्दु संस्कृति के कुछ तत्वों में परिवर्तन आया।

④ आधुनिक काल में विवेकानन्द, महात्मा गाँधी, विनोबा भावे आदि सरीखे व्यक्तित्व ने भारतीय समाज व संस्कृति में परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। इन व्यक्तियों के व्यक्तित्व से संबंधित विचार एवं कर्म पूरी दुनिया में फैल रहे हैं। उदाहरणस्वरूप गाँधी के सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, व्यक्ति, समाज के लिए आदि संबंधी विचार एवं कर्म पद्धति ने पूरे विश्व को प्रभावित किया।

⑤ मानवीय व्यक्तित्व हर दिन नये-नये विचारों एवं खोजों से संस्कृति को उन्नत करता है। नये आदर्शों का निर्माण व्यक्ति ही करता है।

⑥ दो भिन्न समाज की संस्कृति में भिन्नता के कारण बहुत हद तक व्यक्तित्व है। मानव अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भौतिक एवं अभौतिक संस्कृति का निर्माण करता है। अतः मानवीय व्यक्तित्व में भिन्नता के कारण आवश्यकताओं की पूर्ति से संबंधित संस्कृति में भी भिन्नता पाई जाती है।

जिस प्रकार संस्कृति व्यक्तित्व को प्रभावित करती है, उसी प्रकार व्यक्तित्व भी संस्कृति को। अतः संस्कृति और व्यक्तित्व में किसी एक को दूसरे की तुलना में अधिक या कम महत्वपूर्ण नहीं कहा जा सकता है। इन दोनों में पारस्परिक संबंध है।